The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 2, Issue 2 - 2018

पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत कृषि आधारित उद्योगों का विकास (जनपद कानपुर देहात के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ शरद दीक्षित*

"The purpose of studying economics is not to acquire a set of readymade answers to economic questions but to learn how to avoid being deceived by economists."

-Mrs. John Robinson

प्रस्तावना

आर्थिक विकास का ऐतिहासिक अनुभव और आर्थिक विकास की सैद्धान्तिक व्याख्या यह स्पष्ट करते हैं कि आर्थिक विकास की प्रारम्भिक अवस्था में, प्रत्येक अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान होता है। विकसित अर्थव्यवस्थाओं के विकास अनुभव भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। कृषि समस्त उद्योगों की जननी, मानव जीवन की पोषक, प्रगति की सूचक तथा सम्पन्नता की प्रतीक समझी जाती है। तीव्र आर्थिक विकास की ओर उन्मुख वर्तमान गतिशील विश्व के समस्त विकसित एवं विकासशील देश अपने उपलब्ध संसाधनों का अपनी परिस्थितियों एवं क्षमताओं के अनुरूप यथासम्भव अनुकूलतम उपयोग कर कृषि उत्पादों में परिमाणात्मक एवं गुणात्मक सुधार तथा प्रगतिशील एवं व्यावसायिक कृषि के विकास हेतु सचेत एवं सतत प्रयासरत हैं। विकासशील राष्ट्रों में प्रधान व्यवसाय होने के कारण कृषि राष्ट्रीय आय का सबसे बड़ा स्रोत, रोजगार एवं जीवनयापन का प्रमुख साधन, औद्योगिक विकास, वाणिज्य एवं व्यापार का आधार है। निर्धन एवं विकासशील राष्ट्र अपने सीमित साधनों द्वारा आर्थिक विकास की ऊँची दर तब तक प्राप्त नहीं कर सकते जब तक कि वे आधारभूत कृषि उद्योग का विकास न कर लें। इन देशों में आर्थिक विकास के लिए कृषि विकास पर इसलिए भी ध्यान दिया जाता है क्योंकि कृषि क्षेत्र में पूँजी–उत्पाद अनुपात अधिक ऊँचा नहीं होता तथा कृषि विकास के लिए विदेशी पूँजी की उतनी आवश्यकता नहीं पड़ती जितनी कि औद्योगिक विकास के लिए पड़ती है। कृषि विकास के सोपान पर चढ़कर ही विश्व के विकसित राष्ट्र आज आर्थिक विकास के शिखर तक पहुँचे हैं। भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसके कारण यहाँ की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। अत: देश के आर्थिक विकास के लिए कृषि विकास आवश्यक है। चूँकि उद्योग को सम्पन्नता व कृषि को पिछड़ेपन का सूचक माना जाता है, इसलिए प्रत्येक राष्ट्र औद्योगीकरण द्वारा देश के आर्थिक विकास की गति को तीव्र करने का प्रयास करता है। कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था वाले देश अन्य उद्योगों की स्थापना के स्थान पर कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना कर देश के आर्थिक विकास को तीव्र कर सकते हैं। इन कृषि आधारित लघु एवं वृहत उद्योगों की स्थापना से देश के आर्थिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ा है, तथा इसे किस प्रकार और तीव्र गति प्रदान की जा सकती है। प्रारम्भ से यह मेरी जिज्ञासा का विषय रहा है।

*Assistant Professor, Department of Economics, PSIT College of Law, Kanpur.
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-401X**

अध्ययन का उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र में कृषि आधरित उद्योगों की वर्तमान स्थिति ज्ञात करना।
2. अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत कृषि आधरित उद्योगों में रोजगार सृजन एवं आय सृजन का अध्ययन करना।

साहित्य समीक्षा

शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य जो उपलब्ध हुआ है उसमें (1) डॉ0 आर0ए0 चौरसिया द्वारा लिखित पुस्तक 'एग्रो इण्डस्ट्रियल डेवलपमेंट–ए स्टडी' है, इसमें योजनाकाल के पश्चात् भारत में कृषि आधरित औद्योगीकरण के विकास को प्रस्तुत किया गया है। (2) डॉ0 ब्रजेन्द्र नाथ बनर्जी की पुस्तक 'इण्डस्ट्री एग्रीकल्चर एण्ड रूरल डेवलपमेंट' है। इसमें डॉ0 बनर्जी ने यह स्पष्ट किया है कि ग्रामीण विकास में कृषि आधरित उद्योग विशेष महत्त्व रखते हैं। जिला उद्योग केन्द्र द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'औद्योगिक निर्देशिका' है इसमें जिले में कृषि आधरित उद्योगों की स्थिति रोजगार, पूँजी, उत्पादन को स्पष्ट किया है।

अध्ययन की शोध विधि

प्रस्तुत शोधपत्रा वर्णनात्मक शोध प्रविधि के अन्तर्गत कृषि, अर्थव्यवस्था, आर्थिक विकास, श्रमशक्ति, रोजगार सृजन, कानपुर देहात विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में व्यापक श्रमशक्ति कृषि क्षेत्रा से अपनी आजीविका कमाती है। उन्नत कृषि दशाओं में कृषि से ही सम्ब गैर–पफर्म रोजगार अवसर बढ़ने के अतिरिक्त जनसंख्या को रोजगार दिया जा सकता है। कानपुर देहात जनपद की अर्थव्यवस्था ग्रामीण अर्थव्यवस्था है। यहाँ की अर्थव्यवस्था कृषि उत्पादन, आय और उद्योगों के उद्भव और विकास का आधरित है। अकबरपुर विकासखण्ड कृषि आधरित औद्योगीकरण का लाभप्रद और सम्भाव क्षेत्रा है। कानपुर देहात जनपद में कृषि आधरित खाद्य प्रसंस्करण उद्योग सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है क्योंकि इस जनपद में इन उद्योगों की संवृधि एवं विकास की पर्याप्त सौविध्य दशायें प्रवर्तमान है। यह अध्ययन कृषि आधरित उद्योगों की वर्तमान स्थिति एवं कृषि आधरित उद्योगों में रोजगार सृजन एवं आय सृजन की संभावना को प्रस्तुत करता है। भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहाँ की 75 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण विकास की योजनाओं का एक महत्वपूर्ण अंग है। देश में गिरती ग्रामीण अर्थव्यवस्था को संभालने तथा कृषि में तीव्र विकास के अवरोधों को समाप्त करने के लिए कृषि पर आधारित उद्योगों के विकास, विस्तार की व्यापक संभावनायें हैं। कृषि उद्योगों की स्थापना से कृषि उपजों को कच्चे माल के रूप में प्रयोग करके व्यापारिक स्तर पर वस्तुओं का निर्माण करने का कार्य किया जाता है। इससे आर्थिक तथा सामाजिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।

देश में स्वतंत्रता के पश्चात् कृषि उत्पादन में वृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जहाँ वर्ष 1984–85 में 14.55 करोड़ टन खाद्यान्नों का उत्पादन

होता था, वहीं वर्ष 2006–07 में यह लगभग 21.72 करोड़ टन है। कृषि क्षेत्र में इस उल्लेखनीय सफलता का श्रेय देश के कृषकों, वैज्ञानिकों तथा कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं को जाता है। कृषि उत्पादन वृद्धि के फलस्वरूप शासकीय प्रयासों में कृषकों को उत्कृष्ट किस्म के बीज, रासायनिक उर्वरक, सिंचाई सुविधाएँ उदारता से उपलब्ध करायी गयी। विकासशील देशों में भुगतान संतुलन अधिकतर घाटे का रहता है। कृषि उत्पादन में वृद्धि इन देशों में आयात घटाने का सर्वप्रमुख साधन है। औद्योगिक विकास तभी हो सकता है जब कृषि में समृद्धि आये या दोनों (कृषि एवं उद्योग) में वृद्धि हो। लेकिन यह नहीं हो

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

सकता कि पहले औद्योगिक विकास हो बाद में कृषि विकास हो। कृषि अथवा प्राथमिक क्षेत्र में जो कुछ उत्पादन होता है उनमें अधिकांश ऐसा होता है जो प्रसंस्कारित करके ही समाज में उपयोग लायक बनाया जा सकता है। यह तत्काल औद्योगिक क्रियाओं को जन्म देता है। आर्थिक विकास में कृषि निम्नलिखित रूपों में सहायक होती है। अर्द्धविकसित अर्थव्यवस्थाओं में खाद्य उत्पादन में तीव्र वृद्धि आवश्यक है क्योंकि इन अर्थव्यवस्थाओं में जनसंख्या वृद्धि दर अत्यन्त ऊँची 1.5 से 3.0 प्रतिशत तक होती है। दूसरी ओर व्यापक जनसमूह का उपभोग स्तर अत्यन्त नीचा होता है।

विमर्श

वर्तमान समय में विश्व के विकसित तथा विकासशील सभी देशों में बेरोजगारी की समस्या आर्थिक विकास की एक प्रमुख समस्या के रूप में सामने आ रही है। लगातार बढ़ती बेरोजगारी की गम्भीर समस्या, उसके आर्थिक व सामाजिक परिणाम तथा उनके समाधान सम्बन्धी आर्थिक नीतियों की असफलता ने अर्थव्यवस्थाओं के नीति–निर्धारकों को यह सोचने के लिए विवश कर दिया है कि वे अपने उपलब्ध उत्पादन के साधनों तथा उनको प्रयोग करने वाली समस्त उत्पादन विधियों को अपने सामाजिक तथा आर्थिक परिप्रेक्ष्य में देखे।

आज भारत की एक प्रमुख समस्या इसके एक व्यापक जनसमूह में व्याप्त बेरोजगारी की है। बेरोजगारी की यह समस्या ग्रामीण क्षेत्र में अधिक व्यापक और गहन है। बेरोजगारी के प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप निर्धनता, अकाल, कुपोषण एवं अल्पपोषण की समस्यायें उत्पन्न होती हैं। समाज में उत्पादक रोजगार में कमी के कारण विभिन्न लोगों की अनिवार्यताएं भी पूरी नहीं हो पाती। वे अल्पपोषण और कुपोषण के कारण विभिन्न रोगों के शिकार बन जाते हैं। कार्यक्षमता कम हो जाती है जिससे आय–प्राप्ति की सम्भावना और भी घट जाती है। बेरोजगार स्वयं तो कुण्ठा और तनाव का जीवन बिताता ही है, साथ–साथ वह सामाजिक उत्पादन में कोई योगदान किये बिना सामाजिक उत्पादन का एक अंश उपभोग करता है जिससे समाज में प्रति व्यक्ति उत्पाद उपलब्धता कम हो जाती है। यह स्थिति तब अधिक दुःखदायी प्रतीत होती है जब यह ज्ञात होता है कि एक ओर खाद्यान्नों का संचय किया जा रहा है जिससे भण्डारगृहों की कमी हुयी जा रही है और दूसरी ओर क्रयशक्ति की कमी के कारण बेरोजगारी को न्यूनतम स्तर तक भी खाद्यान्न उपलब्ध नहीं होता है। बेरोजगारी के आर्थिकेत्तर प्रभाव भी अत्यन्त हानिकारक हैं। उपयुक्त रोजगार और सामाजिक सुरक्षा के अभाव में लोग प्रायः असामाजिक और अवांछित क्रियाओं के प्रति तत्पर होने लगते हैं। योजनाकाल में रोजगार सृजन के प्रयासों के बाद भी भारतीय अर्थव्यवस्था में बेरोजगारों की संख्या बढ़ती जा रही है। बेरोजगारी के समयबद्ध और ब्यौरेवार आंकड़ों की कमी है तथापि यत्र–तत्र बिखरे आंकड़ों को क्रमबद्ध करने पर बेरोजगारी की मात्रा और उसकी प्रवृत्ति का आभास होता है। विभिन्न योजनाओं में योजना आयोग द्वारा किये गये अनुमानों से ज्ञात होता है कि प्रत्येक योजना की समाप्ति पर बेरोजगारों की संख्या बढ़ गयी है।

भारत में प्रथम योजना के आरम्भ में बेरोजगारों की संख्या 3.3 मिलियन थी जो योजना के अन्त में 5.3 मिलियन हो गयी। दूसरी योजना के अन्त में बेरोजगारी की संख्या बढ़कर 7.1 मिलियन और तीसरी योजना के अन्त में 9.6 मिलियन हो गयी। जनपद कानपुरुर देहेहात मैं कृषि एवं कृषि आधारित उद्योगेगों का विकास जनपद कानपुर देहात में कृषि विकास में तीव्र गति से वृद्धि हुई है। यहाँ पर 1950–51 सेलेकर 2005–06 तक की अवधि में कृषि उत्पादन

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

तथा उत्पादकता काफी बढ़ी है। जनपद में कृषि यंत्रीकरण के प्रयोग में वृद्धि, प्रमाणित बीज का प्रयोग, सिंचाई के साधनों में वृद्धि आदि से कृषि विकास तेज हुआ है। 2001 में जहाँ जनपद में गेहूँ का कुल उत्पादन 394871 मी0 टन चावल का 120615 मी0 टन, जौ का 14351 मी0 टन, बाजरा का 15020 मी0 टन, मक्का का 31100 मी0 टन मूंग का 309 मी0 टन, उड़द का 4665 मी0 टन हुआ था, वर्तमान में बढ़कर बहुत अधिक हो गया है। इस प्रकार जनपद में पर्याप्त मात्रा में कृषि उत्पादन के होने से कृषि पर आधारित उद्योगों की स्थापना में भी तीव्र गति से वृद्धि हुई है। योजनावधि में जनपद के प्रत्येक विकास खण्ड में कृषि आधारित उद्योगों की संख्या बढ़ी है। जिससे यहाँ के आर्थिक विकास पर अच्छा प्रभाव पड़ा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. औद्योगिक निर्देशिका पत्रिका–जिला उद्योग केन्द्र, कानपुर देहात, जुलाई–2015.
[2]. भारत सरकार सूक्ष्म एवं लघु उद्योग मंत्रालय रिपोर्ट।
[3]. इण्डस्ट्री एग्रीकल्चर एण्ड रूरल डेवलपमेंट–डॉ0 बृजेन्द्रनाथ बनर्जी।
[4]. एग्रो इण्डस्ट्रियल डेवलपमेंट ए स्टडी–डॉ0 आर0ए0 चौरसिया।
[5]. योजना, मासिक पत्रिका, कुरूक्षेत्रा पत्रिका एवं खादी ग्रामोद्योग पत्रिका।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X